بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

Office of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश खुत्बः जुम्अः सैय्यदना ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक **11.03.2016** बैतुल फ़तूह लंदन।

प्रत्येक ऐसी चीज़ जो अल्लाह तआला को नापसन्द है वह मुनकर है जब तक कि समस्त बुरे आचरणों को न छोड़ दिया जावे, मन की पवित्रता कहाँ प्राप्त हो सकती है। प्रत्येक व्यक्ति में किसी न किसी बुराई का बीज होता है, वह उसका शैतान होता है जब तक कि उसकी हत्या न करे, काम नहीं बन सकता।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुजूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ۭ وَمَنْ يَّتَّبِعْ خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ فَاِنَّهٗ يَاْمُرُ بِالْفَحْشَاۗءِ وَالْمُنْكَرِ ۭ وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ مَا زَكٰى مِنْكُمْ مِّنْ اَحَدٍ اَبَدًا ۙ وَّلٰكِنَّ اللّٰهَ يُزَكِّيْ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۲۱﴾ [۲۴:۲۱]

इस आयत का अनुवाद है कि हे लोगो, जो ईमान लाए हो शैतान के पद्चिन्हों पर मत चलो और जो कोई शैतान के पद्चिन्हों पर चलता है तो वह तो निस्संदेह अश्लील एंव बुरी बातों का आदेश देता है। और यदि अल्लाह की कृपा तथा उसकी रहमत तुम पर न हो तो तुम में से कोई एक भी कभी पवित्र नहीं हो सकता। परन्तु अल्लाह जिसे चाहता है पाक कर देता है और अल्लाह बहुत सुनने वाला तथा स्थाई ज्ञान रखने वाला है।

शैतान मनुष्य का अनन्त काल से शत्रु है तथा सदैव रहेगा। यह इस लिए नहीं कि उसमें कोई शक्ति है सदैव रहने की, वरन् इस लिए कि मनुष्य की उत्पत्ति के समय अल्लाह तआला ने उसे अधिकार दिया था कि वह स्वतंत्र है। क्यूँकि अल्लाह तआला जानता है कि उसके बन्दे (विश्वास पात्र) शैतान के आक्रमणों से सुरक्षित रहेंगे। शैतान की यह दुश्मनी कोई साक्षात शत्रुता नहीं है कि सामने से आकर लड़ रहा है, बल्कि वह विभिन्न छल कपट एंव बहानों से, मकर व फ़रेब से, सांसारिक स्वार्थ के द्वारा मनुष्य के अहंकारों को उभारते हुए मनुष्य को नेकियों से दूर ले जाता है तथा बुराईयों के निकट करता है। शैतान ने ख़ुदा तआला से कहा था कि जिस प्रकृति पर तू ने इंसान को पैदा किया है, जिस प्रकार वह, उसकी प्रकृति यह है कि दानों ओर मुड़ सकता है, उसको मैं अपने पीछे चलाऊँगा क्यूँकि बुराईयों की ओर इसका अधिक ध्यान होगा। यदि तू मुझे अनुमति दे तो मैं उस पर प्रत्येक छोर से आक्रमण करुंगा, प्रत्येक मार्ग पर इसको बहकाऊँगा तथा तेरे विशेष बन्दों के अतिरिक्त कि वे तो मेरे इस आक्रमण से बचेंगे, उन पर तो मेरा कोई मकर, कोई आक्रमण, प्रभाव पूर्ण नहीं होगा, इनके अतिरिक्ति अधिकांश लोग मेरे पीछे चलेंगे। अल्लाह तआला ने उसे अनुमति प्रदान कर दी और साथ ही यह भी फ़रमा दिया कि जो तेरे पीछे चलने वाले होंगे उन्हें मैं नर्क में डालूँगा परन्तु साथ ही अल्लाह तआला ने अपने नबियों के भेजने के प्रबन्ध को जारी करके इंसान को नेकियों के मार्ग भी बताए, उनको सुधार के साधन भी बताए, उनको अपनी दुनया एंव अख़िरत संवारने के साधन भी बताए। क़ुरआन-ए-करीम में भी अनेक स्थानों पर अल्लाह तआला ने हमें शैतान के हमलों तथा उसके छल कपट और धोखे से सावधान किया है। इस आयत में भी जो मैंने तिलावत की है अल्लाह तआला ने यही बताया है। अल्लाह तआला ने इस आयत के अन्त पर मोमिनों को सांतवना इस बात से दी है कि अल्लाह तआला समीअ है, अल्लाह तआला सुनने वाला है। अतः उसके द्वार को खटखटाओ और उसको पुकारो तथा निरन्तरता के साथ उसको पुकारो, उसके समक्ष निरन्तर दुआएँ करते हुए झुके रहो तो वह ख़ुदा जो अलीम भी है अपने बन्दों के हालात को जानता है। जब वह देखेगा कि मेरा बन्दा वास्तव में विशुद्ध होकर मुझे पुकार रहा है तो फिर ख़ुदा ऐसे मोमिन के दिल में इस प्रकार की ईमानी शक्ति पैदा कर देगा जिसके द्वारा वह शैतान के आक्रमण से सुरक्षित हो जाएगा। नेकियों के स्तर बुलन्द से बुलन्द करने की तौफ़ीक़ मिल जाएगी तथा बुराईयों से बचने का उसमें सामर्थ्य पैदा हो जाएगा।

विशुद्ध बन्दे बनने के लिए इस आयत में अल्लाह तआला ने एक नुसख़ा बताया है कि अश्लीलता एंव कुकर्मों से अर्थात प्रत्येक ऐसी बात से अपने आपको बचाओ जो अनर्थ एंव व्यर्थ है, जो ख़ुदा तआला को नापसन्द है तथा जो अश्लील एवं बुरी बातों से बचेगा, अल्लाह तआला की रहमत उसको पवित्र करेगी और जिसको अल्लाह तआला पवित्र कर दे वह पाक हो जाता है तथा ऐसे पवित्र आत्मा वालों के पास फिर शैतान नहीं आता। यह बात भी हमें याद रखनी चाहिए कि शैतान का आक्रमण एक साथ नहीं होता, वह धीरे धीरे हमला करता है। कोई छोटी सी बुराई इंसान के दिल में डाल कर यह धारणा पैदा कर देता है कि इस छोटी सी बुराई से क्या प्रभाव पड़ता है, कौनसा यह बड़ा पाप है। फिर ये छोटी छोटी बुराईयाँ बड़े पापों के आगमन का कारण बन जाती हैं। आवश्यक नहीं कि डाका और हत्या ही बड़े पाप हैं, कोई भी बुराई जब समाज के अमन व शांति को भंग करे वह बड़ी बुराई बन जाती है। मनुष्य की वह भावना मिट जाती है कि वह क्या कर रहा है। कुछ लोगों के दिल में यह प्रश्न पैदा होता है कि अल्लाह तआला ने शैतान को बनाया ही क्यूँ? पहले ही दिन उसकी अवज्ञा पर दंड देकर उसे नष्ट क्यूँ नहीं कर दिया? यदि पहले दिन ही शैतान को नष्ट कर दिया जाता तो दुनया में उपद्रव ही न होते। इस बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक स्थान पर फ़रमाते हैं कि यह बात हर एक को माननी पड़ती है कि प्रत्येक मनुष्य के लिए दो आकर्षण हैं, अर्थात खींचने वाली चीज़ें दो मौजूद हैं। एक भलाई का आकर्षण है जो नेकी की ओर उसको खींचता है, दूसरा बुराई का आकर्षण है जो बदी की ओर खींचता है। जैसा कि यह बात सब देखते और जानते हैं कि कई बार इंसान के दिल में बुरे विचार आते हैं तथा उस समय वह ऐसा बदी की ओर झुकता है कि मानो उसको कोई बुराई की ओर खींच रहा है। और फिर कई बार नेकी का विचार उसके दिल में आता है तथा उस समय वह ऐसा नेकी की ओर झुकता है कि मानो कोई उसको नेकी की ओर खींच रहा है। और कई बार एक व्यक्ति बुरा काम करके फिर अच्छे काम की ओर आकर्षित होता है तथा बड़ा लज्जित होता है कि मैंने बुरा काम किया है और कभी ऐसा होता है कि एक व्यक्ति किसी को गालियाँ देता और मारता है फिर लज्जित होता है और दिल में कहता है कि मैंने यह बड़ा बुरा काम किया है तथा उसके साथ कोई नेक व्यवहार करता है अथवा क्षमा मांगता है।

ये दोनों शक्तियाँ जो प्रत्येक मनुष्य में विद्यमान हैं चाहे तुम उनको दो शक्तियाँ कहो अथवा रूहुल क़ुदुस और शैतान नाम रक्खो परन्तु प्रत्येक दशा में तुम इन दोनों अवस्थाओं के होने से इंकार नहीं कर सकते तथा उनके पैदा करने का कारण यह है कि इंसान अपने नेक कर्म के कारण प्रतिफल प्राप्त करने का अधिकारी ठहर सके क्यूँकि यदि इंसान की प्रकृति इस प्रकार की होती कि वह हर अवस्था में नेक काम करने के लिए विवश होता तथा बुरा काम करने से प्राकृतिक रूप से घृणा करता तो फिर इस हालत में नेक काम का तनिक भी उसको प्रतिफल न मिलता क्यूँकि वह उसकी प्रकृति की विशेषता होती। परन्तु इस अवस्था में कि उसकी प्रकृति दो आकर्षणों की बीच है तथा वह नेकी के आकर्षण का अनुसरण करता है, उसको इस कार्य पर प्रतिफल मिल जाता है।

अब फ़रमाया कि निःसन्देह इंसान के दिल में दो प्रकार की भावनाएँ अवतरित होती हैं, नेकी की भावना और बदी की भावना। अब अवगत है कि ये दोनों अवतरण इंसान की उत्पत्ति का अंश नहीं हो सकते। फिर इस बात को बयान करते हुए कि कौन कौन सी चीज़ें हैं जिनकी ओर शैतान बुलाता है, कौनसे इंसान शैतान के पद्चिन्हों पर चलने वाले हैं तथा कौन सी चीज़ें हैं जिनको प्राप्त करके इंसान शैतान के क़दमों पर चलने से बचता है। इस बारे में सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि शैतान झूठ, अत्याचार, आक्रोष, हत्या, दीर्ध कार्य, दिखावा तथा घमन्ड की ओर बुलाता है और आमन्त्रण देता है। इसके विपरीत शुभ आचरण, संतोष, ईश्वर में लीन होना, विशुद्धता, निष्ठा, ईमान, भलाई, ये अल्लाह तआला के आमन्त्रण हैं। एक ओर शैतान निमंत्रण दे रहा है दूसरी ओर अल्लाह तआला निमंत्रण दे रहा है इन नेकियों की। इंसान इन दोनों परीक्षाओं में पड़ा हुआ है। अर्थात दो प्रकार के आकर्षण हैं, खींचने वाली चीज़ें हैं, इन दोनों में पड़ा हुआ है। फिर जिसकी प्रकृति विशुद्ध है तथा निष्ठा का बीज उसके भीतर रक्खा हुआ है वह शैतान के हज़ार निमंत्रणों तथा भावनाओं के होते हुए भी उस नेक प्रकृति तथा सलामती के मार्ग के अनुसरण की बरकत के कारण, अल्लाह तआला फिर उसे इतना सामर्थ्य प्रदान करता है कि वह अल्लाह तआला की ओर दौड़ता है, बजाए शैतान की ओर दौड़ने के, और ख़ुदा ही मे अपनी संतुष्टि, सांतवना एंव संतोष पाता है।

फिर आपने फ़रमाया कि प्रत्येक चीज़ के लिए निशान अवश्य होते हैं जब तक कि उसमें वे संकेत न पाए जावें वह प्रमाणिक नहीं हो सकती। इसी प्रकार ईमान के निशान हैं। यह सत्य है कि जब इंसान के अन्दर ईमान प्रवेश करता है तो उसके साथ ही अल्लाह तआला की महानता अर्थात प्रताप, विशुद्धता, वर्चस्व, शक्ति तथा सबसे बढ़कर ला इलाहा इलल्लाह का

वास्तवकि भावार्थ प्रविष्ट हो जाता है। यहां तक कि अल्लाह तआला उसके भीतर निवास करता है तथा शैतानी जीवन पर एक मौत आ जाती है और पाप करने की क्षमता मर जाती है। यह वह सौभाग्य है प्रकृति का, कि यदि उपयुक्त ईमान है तो फिर पाप करने की प्रवृत्ति मर जाती है। उस समय एक नया जीवन प्रारम्भ होता है और रूहानी जीवन मिलता है अथवा यह कहो कि आसमानी जन्म का पहला दिन वह होता है जब शैतानी जीवन पर मौत आती है तथा रूहानी जीवन के बच्चे का जन्म होता है तो यही वह समय होता है जब इंसान फिर ख़ुदा तआला का होता है।

पाप दो थे, एक आदम ने किया एक शैतान ने। परन्तु आदम में अहंकार न था इस लिए ख़ुदा के समक्ष अपने पाप को स्वीकार किया तथा उसका पाप क्षमा कर दिया गया। इसी के साथ इंसान के लिए तौबा के द्वारा पापों के क्षमा हो जाने की आशा है। घमन्ड न हो, गुनाह स्वकारीय हों, क्षमा याचना करे इंसान, अल्लाह तआला से मग़फ़िरत चाहे तो क्षमा कर दिया जाता है तथा यह आशा जागती है कि अल्लाह तआला क्षमा कर देगा। परन्तु शैतान ने अहंकार किया वह धिक्कृत हुआ। फ़रमाया कि घमन्डी व्यक्ति अकारण ही अपने लिए उस चीज़ के दावे के लिए तय्यार हो जाता है जो उसके पास है ही नहीं। बड़ाई ख़दा के लिए है। जो लोग घमंड नहीं करते तथा विनम्रता से काम लेते हैं वे नष्ट नहीं होते, अतः अहंकार से बचो।

यह वह गुण है जो मोमिन को धारण करना चाहिए अन्यथा वह शैतान के क़दमों पर चलने वाला है। अंहकार को कई बार मनुष्य अनुभव नहीं करता, इस लिए बड़ी सूक्ष्मता से हमें आत्म निरीक्षण करना चाहिए। शैतान किस किस प्रकार इंसान को अपने वश में करने के लिए छल कपट करता है। इस बारे में एक अवसर पर बयान फ़रमाते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि यदि इंसान के कर्मों से कहीं गुनाह दूर हो जावे अर्थात कोई ऐसा काम न करे जो गुनाह वाला है, कोई उसका ऐसा कर्म न हो जिसको कहा जावे कि यह पाप है तो शैतान चाहता है, क्या चाहता है शैतान? कि आँख, कान, नाक तक ही रहे। यदि प्रत्यक्षतः कोई काम गुनाह वाला न हो तब भी शैतान की यह अभिलाषा होती है कि इंसान की आँख में बैठा रहे , नाक में बैठा रहे। फ़रमाया कि वहाँ भी उसे क़ाबू नहीं मिलता तो फिर वहा यहाँ तक प्रयास करता है कि और नहीं तो दिल ही में बना रहे। कुछ लोगों के हालात, अवसर ही नहीं मिलता अथवा ऐसी परिस्थितियाँ ही नहीं बनतीं कि पाप करें अथवा किसी भय के कारण नहीं करते, प्रत्यक्ष रूप में कोई पाप नहीं परन्तु शैतान इस प्रयास में फिर भी रहता है कि यदि अल्लाह तआला से सम्बंध नहीं है तो किसी न किसी क्रिया से उसके अन्दर पाप का बीज रक्खे तथा उसके दिल में बैठ जाए। परन्तु जिस दिल में ख़ुदा का भय है वहाँ शैतान का अधिकार नहीं चल सकता।

अतः वास्तविकता यही है कि ख़ुदा का भय दिल में रहे। ख़ुदा का भय होगा तो अनेक बुराईयों से इंसान फिर बच सकता है। एक चोर भी जो चोरी करता है यदि उसको यह पता चल जाए कि उसको कोई बच्चा भी देख रहा है तो उस बच्चे का भी भय होता है उसे। अतः जब तक यह हमारे दिलों में नहीं होगा कि हम कोई भी कर्म करते हुए अथवा हर समय यह मस्तिष्क में रक्खें कि हमारा ख़ुदा हमें देख रहा है तो उस समय तक गुनाहों से नहीं बच सकता इंसान। इंसान की दो शक्तियाँ हैं जो सदैव साथ लगी रहती हैं एक फ़रिश्ते दूसरे शैतान। मानो उसकी टांगों में दो रस्से पड़े हुए हैं। फ़रिश्ता नेकी में प्रोत्साहन तथा सहायता देता है जैसा कि क़ुरआन शरीफ़ में आया है कि ایدھم بروح منہ। अर्थात अपना कलाम भेज कर उनकी सहायता की , तथा शैतान बदी करने की ओर प्रोत्साहित करता है जैसा कि क़ुरआन शरीफ़ में आया है, यूवसविसु। इन दोनों का इन्कार नहीं हो सकता। अंधकार एंव प्रकाश दोनों साथ साथ लगे हुए हैं। फिर इस बात की व्याख्या करते हुए कि शैतान किस प्रकार भ्रम डालता है, एक उदाहरण तो पहले दे दिया तथा इस भ्रम से किस प्रकार बचना है कि ये धनवान लोग हमारी आवश्यकताएँ पूरी करने वाले हैं अथवा अल्लाह तआला के अतिरिक्त कोई अस्तित्व भी है जो हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकती है आप फ़रमाते हैं कि इस लिए वास्तविक रब्बिन्नास की पनाह चाहने के लिए फ़रमाया। इस लिए अल्लाह तआला ने यह फ़रमाया कि यह दुआ करो कि मैं वास्तविक रब्बिन्नास जो है उसकी शरण में रहूँ। फिर सांसारिक बादशाहों तथा हाकिमों को इंसान सर्वशक्तिमान कहने लग जाता है। इस पर फ़रमाया कि मलिकिन्नास अल्लाह ही है। फिर लोगों के भ्रम का यह परिणाम होता है कि रचना को रचनाकार के समान मानने लग पड़ते हैं तथा उसने भय एंव आशाएँ रखते हैं इस लिए इलाहिन्नास फ़रमाया। तुम्हारा पूज्य अल्लाह तआला है। ये तीन भ्रम हैं, इनको दूर करने के लिए ये तीन कलमे हैं जो सूरः अन्नास में बयान किए गए हैं तथा इन भ्रमों को डालने वाला वही ख़न्नास है अर्थात शैतान है।

फिर एक अवसर पर इस बात को बयान फ़रमाते हुए कि दीन को हर हाल में दुनया पर प्राथ्मिकता देनी चाहिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि देखो दो प्रकार के लोग होते हैं एक तो वे जो इस्लाम को क़बूल करके दुनया के धन्धों तथा व्यापारों में वयस्त हो जाते हैं, शैतान उनके सिर पर सवार हो जाता है। मेरा यह अभिप्रायः नहीं कि व्यापार करना वर्जित है, नहीं, सहाबा व्यापार भी करते थे परन्तु दीन को दुनया पर प्राथ्मिकता देते थे। उन्होंने इस्लाम क़बूल किया तो इस्लाम

के विषय में सच्चा ज्ञान जो विश्वास से दिलों को भर दे, उन्होंने प्राप्त किया। यही कारण था कि वे किसी मैदान में शैतान के हमले से नहीं डगमगाए। कोई बात भी सच्चाई को प्रकट करने से उन्हें नहीं रोक पाई।

अतः हमें ऐसा व्यापार करना चाहिए, उन रास्तों पर चलने का प्रयास करना चाहिए जिनकी ओर ज़माने के इमाम ने तथा अल्लाह तआला के द्वारा अवतरित तथा मसीह मौऊद और मेहदी मअहूद हमें बुला रहे हैं ताकि शैतान के पद्चिन्हों पर चलने से हम बचें तथा अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करते हुए भयंकर यातना से बचें।

फिर इस ओर ध्यान दिलाते हुए कि गुप्त पापों से बचो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि जब कोई कठिनाईयों से ग्रस्त होता है तो ग़लती अन्ततः बन्दे की ही होती है। कठिनाईयों में घिरने के बाद यह कहना कि अल्लाह तआला की ओर से यातना आ पड़ी, नहीं, दोष बन्दे का ही होता है। ख़ुदा तआला का तो दोष नहीं है। कुछ लोग प्रत्यक्षतः बड़े नेक प्रतीत होते हैं तथा मनुष्य आश्चर्य करता है कि उस पर कोई यातना क्यूँ आई अथवा किसी नेकी की प्राप्ति से क्यूँ वंचित रहा परन्तु वास्तविकता यह है कि उसके पाप गुप्त होते हैं जिन्होंने उसकी दशा यहाँ तक पहुंचाई हुई होती है। अल्लाह तआला क्यूँकि बहुत माफ़ करता है तथा अनदेखा करता है इस कारण से इंसान के गुप्त पापों का किसी को पता नहीं लगता परन्तु गुप्त पाप वास्तव में प्रत्यक्ष पापों से अधिक बुरे होते हैं। गुनाहों का हाल भी बीमारियों की भांति है अर्थात मोटी बीमारियाँ हैं जिनको प्रत्येक व्यक्ति देख लेता है, ज़ाहिर की बीमारी कि अमुक व्यक्ति बीमार है परन्तु कुछ ऐसे गुप्त रोग हैं कि कई बार रोगी को भी आभास नहीं होता कि मुझे कोई कष्ट हो रहा है ऐसा ही टी बी का रोग है कि आरम्भ में इसका पता कई बार चिकित्सक को भी नहीं हो सकता यहाँ तक रोग भयंकर रूप ले लता है। कई बार ऐसा होता है कि अन्तिम समय पर जाकर पता चलता है। कई बार कैन्सर के रोगी हैं, अच्छा भला स्वस्थ आदमी प्रत्यक्षतः लग रहा होता है और सहसा पता चलता है कि कैन्सर है तथा ऐसी अवस्था में चला गया है जहाँ अब कोई उपचार नहीं, फैल चुका है, तथा महीने के अन्दर अन्दर इंसान नष्ट हो जाता है।

अतः फ़रमाया कि जिस प्रकार रोग का पता नहीं चलता ऐसे ही इंसान के भीतरी पाप हैं जो धीरे धीरे उसे विनाश तक पहुंचा देते हैं। ख़ुदा तआला अपने फ़ज़्ल से रहम करे। क़ुरआन शरीफ़ में आया है قد افلح من زکھا कि उसने मुक्ति प्राप्त कर ली जिसने अपने मन को पवित्र किया। मन को पवित्र करना भी एक मौत है। जब तक समस्त बुरे आचरणों को न छोड़ा जावे मन की पवित्रता कहाँ प्राप्त होती है। जितने तुच्छ, हीन एंव गन्दे आचरण हैं उनको जब तक नहीं छोड़ोगे जिनपर शैतान चलाना चाहता है, अश्लीलता एवं मुनकर पर चलाना चाहता है, मुनकर का अर्थ यही है कि प्रत्येक ऐसी चीज़ जो अल्लाह तआला को नापसन्द है वह मुनकर है जब तक कि समस्त बुरे आचरणों को न छोड़ दिया जावे, मन की पवित्रता कहाँ प्राप्त हो सकती है। प्रत्येक व्यक्ति में किसी न किसी बुराई का बीज होता है, वह उसका शैतान होता है जब तक कि उसकी हत्या न करे, काम नहीं बन सकता। अतः जैसा कि पहले भी चर्चा हो चुकी है कि हमें हर समय अल्लाह तआला की शरण की आवश्यकता है तथा अपने निरीक्षण करते रहने की आवश्यकता है। शैतान को मारने के लिए क्या और किस प्रकार हमें क़दम उठाना चाहिए इस बारे में एक स्थान पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि पैग़म्बर अल्लाह का रूप तथा ख़ुदा के दर्शन कराने वाले होते हैं फिर सच्चा मुसलमान तथा निष्ठावान वह होता है जो पैग़म्बरों का रूप बने। सहाबा किराम ने इस भेद को भली भांति समझ लिया था और वे रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आज्ञा पालन में ऐसे गुम और खोए गए थे कि उनके अस्तित्व में और कुछ शेष रहा ही नहीं। जो कोई उनको देखता था, उनको लीनता में पाता था। डूबे हुए थे अल्लाह की निकटता को प्राप्त करने में तथा आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सुन्दर आचरण को अपनाने में। अतः याद रक्खो कि इस ज़माने में भी जब तक वह लीनता तथा आज्ञा पालन में व्याग्रता पैदा न होगी जो सहाबा किराम में पैदा हुई थी, मुरीदों तथा विश्वास पात्रों में प्रविष्ट होने का दावा तभी सत्य एंव उचित होगा। यह बात भली भांति अपने मस्तिष्क में बिठा लो कि जब तक यह न हो कि अल्लाह तआला तुम में निवास करे तथा ख़ुदा तआला के लक्षण तुम में प्रकट हों उस समय तक शैतान के शासन का हस्तक्षेप विद्यमान है।

अल्लाह तआला करे हम विशुद्ध होकर अल्लाह तआला के बनने का प्रयास करें। समस्त अश्लीलता तथा बुरे कामों से बचें, समस्त प्रकार की बुराईयों से बचें, हर प्रकार के अहंकार से बचें, अपने मन पवित्रता का प्रयास करते रहें ताकि अल्लाह तआला की कृपा के उत्तराधिकारी बनें। सदैव हमारी दृष्टि ख़ुदा तआला पर हो तथा वही हमारा रब्ब रहे, सदा उसी की मालकीय्यत हमारे दिलों पर क़ब्ज़ा जमाए रक्खे, वही हमारा पूज्य रहे और उसी को हम सदैव पुकारने वाले बने रहें और शैतान के पद्चिन्हों पर चलने से बचते रहें। अल्लाह तआला हमें इसका सामर्थ्य प्रदान करे।